की ओर आकर्षित किया इसलिए Wundt को प्रयोगात्मक-
मनोविज्ञान का जनक (Father) कहा जाता है। Wundt का
जन्म 1832 ई० में जर्मनी में हुआ था। प्रारम्भिक शिक्षा एक
पादरी के संरक्षण में हुआ। इनकी आर्थिक स्थिति ठीक नहीं
रहने के कारण किसी विश्वविद्यालय में दाखिला नहीं पाकर एक
मेडिकल स्कूल में दाखिला करा लिया और 1855 ई० उस
स्कूल के सफल छात्रों में से प्रथम स्थान प्राप्त किया। इस
तरह उनकी अभिरुचि शरीर क्रिया विज्ञान की ओर बढ़ गया।
1858 ई० में इन्होंने अपनी सबसे पहली पुस्तक 'Physiological
Psychology' को प्रकाशित करवाया। 1864 ई० में हेडिलबर्ग
विश्वविद्यालय में प्रोफेसर के पद पर इन्हें प्रदान कर दिया। यहीं
पर उनकी मुलाकात Helmholtz से 1871 ई० में हुई। उसके बाद
उनकी उनकी नियुक्ति Lipzig University के दर्शनशास्त्र के
प्रोफेसर पद पर हुई। यहाँ पर 1879 ई० में इन्होंने विश्व की
सबसे पहली मनोविज्ञान की प्रयोगशाला स्थापित की ~~[illegible]~~
जो Psychological Institute के नाम से जाना जाता है।
मनोविज्ञान की प्रयोगशाला की स्थापना के पश्चात उनके बड़ी
संख्या में विभिन्न देशों के छात्र उनसे दर्शनशास्त्र तथा
मनोविज्ञान का प्रशिक्षण लेने आने लगे जिनमें से Krae-
plin, Lehmann, Cattell, Hull, Titchner, Spearmen
इत्यादि प्रमुख थे। Wundt को प्रयोगात्मक मनोविज्ञान के
संस्थापक होने के साथ-साथ संरचनात्मक मनोविज्ञान का
अग्रगामी माना जाता है क्योंकि अमेरिका में यह प्रसिद्ध हो
चुका था कि Wundt ही संरचनात्मक मनोविज्ञान के अग्रगामी
थे और उनके शिष्य Titchner ने Wundt के विचारों
को विस्तृत रूप से प्रस्तुत करके 1898 ई० संरचनात्मक
मनोविज्ञान की स्थापना की। 1920 ई० में Wundt की
मृत्यु हो गयी।

Wundt प्रयोगवादी होने के साथ-साथ [illegible]

दार्शनिक भी थे। इस कारण इन्होंने दर्शनशास्त्र के विचार सामग्री को आधार बनाते हुए सिद्धांतों का निर्माण किया और बाद में प्रयोगों के आधार पर तथ्य-नियमों को प्रमाणित किया। इस संबंध में Boring ने लिखा है — "He was an experimentalist; but his experimentalism was by the product of his philosophical views."

इस तरह Wundt के मनोविज्ञान के क्षेत्र में उनके योगदानों को दो भागों में बाँटकर अध्ययन किया जाता है —

① वुण्ट एक व्यवस्थित मनोवैज्ञानिक के रूप में।
② वुण्ट (Wundt) एक प्रयोगवादी के रूप में।

उपर्युक्त दोनों भागों की संक्षिप्त व्याख्या इस प्रकार है —

① Wundt एक व्यवस्थित मनोवैज्ञानिक के रूप में :—

Wundt का मनोविज्ञान के क्षेत्र में सबसे प्रमुख स्थान है। Wundt ने ही मनोविज्ञान को स्वतंत्र तथा प्रयोगात्मक मनोविज्ञान का दर्जा दिलाने का महत्वपूर्ण प्रयास किया है और यह तथ्य उनकी पुस्तक 'Outline of Psychology (1886)' के अध्ययन से स्पष्ट रूप से पता चलता है। इस पुस्तक में उन्होंने स्वतंत्र मनोविज्ञान के निम्नांकित मौलिक तत्वों का उल्लेख किया है :-

(i) मनोविज्ञान की परिभाषा एवं विषय-वस्तु :-

Wundt मनोविज्ञान को अनुभव का विज्ञान माना है। इन्होंने अनुभव को दो वर्गों में विभाजित किया है - पहला है तात्कालिक अनुभव एवं दूसरा मध्यवर्ती अनुभव। तात्कालिक अनुभव से तात्पर्य स्वयं की अनुभूति से है जबकि मध्यवर्ती अनुभव तात्पर्य वैसी अनुभूति से है जिसके सहारे बाहरी किसी वस्तु की विषय का निर्धारण हो पाता है। Wundt ने तात्कालिक अनुभव पर

चेतन अनुभव के दो तत्वों का उल्लेख किया है जिनसे संवेदन-एवं भाव कहा जाता है। संवेदन की उत्पत्ति चेतन का वस्तुनिष्ठ तत्व माना है और भाव को चेतना का आत्मनिष्ठ तत्व माना है। ज्ञानेन्द्रियों के कार्यों के ~~[crossed out]~~ उत्पन्न होने से वस्तुओं का संवेदन होता है। भाव के तत्व किसी एक ज्ञानेन्द्रियों से उत्पन्न नहीं होता है। Wundt ने भाव को तीन विमाओं में विभाजित किया है जिन्हें सुखद-दुखद (pleasant-unpleasant), तनाव-शिथिलता (tense-relaxed) तथा उत्तेजन-शांत (excitment-calm) कहते हैं। Wundt का ऐसा विचार था कि प्रत्येक चेतन भाव को इस त्रिविमीय स्थान में व्यवस्थित किया जा सकता है। Wundt के भाव के संबंध में इस विचार को भाव का त्रिविमीय सिद्धांत कहा जाता है। बाद में Wundt ने अपनी पुस्तक 'Physiological Psychology' (1902-1903) के पाँचवें संस्करण में भावना के त्रिविमीय सिद्धांत में एक नया concept अवबोधन (apperception) के नियम को शामिल किया। Apperception एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा किसी मानसिक विषय की पहचान अथवा स्पष्ट ज्ञान होता है। Bolt ने यह दावा किया कि कोई भी मौलिक उद्दीपक-प्रभाव अनुभव में अकेला नहीं आता है बल्कि वह एक अवबोधन पुंज में रहता है और हम उसके से सार्थक विषय की पहचान...

(ii) संबंध के नियम (Principle of connection)

Wundt ने चेतन अनुभव के विभिन्न तत्वों का उल्लेख किया है। इन्होंने यह बताया है कि चेतन अनुभव के विभिन्न तत्व किस प्रकार संयोजित हो जाते हैं और वे कौन-कौन से नियम हैं जिनसे इन तत्वों का संयोजन होता है। इन्होंने अपने विभिन्न प्रयोगात्मक अध्ययनों के आधार पर यह बतलाया कि चेतन के तत्व धारणाओं के माध्यम से संयोजित हो जाते हैं। तत्वों का चेतन संयोजन क्रमिक भी हो सकता है या एक साथ भी हो सकता है

इसलिए Wundt के मनोवादी विज्ञान को साहचर्यवादी विज्ञान भी कहा जाता है। साहचर्य में आत्मसातकरण (assimilation) तथा जटिलता (complication) दोनों ही सम्मिलित होते हैं। आत्मसातकरण में समानता या विरोध के आधार पर तत्वों का साहचर्य स्थापित होता है। जैसे - दो खड़े रेखाओं के बीच यदि एक आड़ा रेखा रहता है तो उस आड़े रेखा की ऊँचाई उसके वास्तविक ऊँचाई से कम दिखलाई देती है। यहाँ पर विरोध द्वारा दृष्टि संवेदनाओं का आत्मसातकरण हो रहा है। जटिलता से तात्पर्य विभिन्न ज्ञानेन्द्रियों जैसे - आँख, कान से प्राप्त संवेदनों के साहचर्य स्थापित से होता है। Wundt ने साहचर्य द्वारा तत्वों के संयोजन की व्याख्या संश्लेषण के नियम के आधार पर किया है। बाद में Titchner ने Wundt के इस नियम की विस्तृत व्याख्या की।

(iii) मनोविज्ञान की विधि (Method of Psychology)

Wundt ने चेतन अनुभव या तात्कालिक अनुभव के अध्ययन की उपयुक्त विधि प्रयोग तथा अन्तःनिरीक्षण को बतलाया है। Wundt ने यह बतलाया कि मनोविज्ञान की अन्तःनिरीक्षण विधि ही ऐसी विधि है जिसके द्वारा व्यक्ति-चेतन अनुभव का विश्लेषण या जानने के लिए करता है कि इसके कौन-कौन से तत्व संश्लेषित होकर अनुभव का निर्माण करते हैं। Wundt ने अन्तःनिरीक्षण विधि को केवल आत्मप्रेक्षण विधि के रूप में स्वीकार नहीं किया बल्कि उन्होंने इसका तात्पर्य एक ऐसे नियंत्रित प्रेक्षण से था जो प्रयोगात्मक आधार पर किये जाते हैं। इस प्रकार अन्तःनिरीक्षण एक प्रकार का प्रयोगात्मक अन्तःनिरीक्षण था। इन्होंने अन्तःनिरीक्षण तथा प्रयोग को एक दूसरे से अलग नहीं किया है।

(iv) मन-शरीर समस्या (Mind-Body Problem):

Wundt ने

मन तथा शरीर को एक दूसरे से समानान्तर कहलाया। क्योंकि उन्होंने कहा कि वे एक दूसरे के साथ अन्तःक्रिया नहीं करते हैं। इसे मनोदैहिक समानान्तरवाद की संज्ञा दी गई है। इस तरह Wundt के अनुसार मन शरीर पर आधारित नहीं होता है और मन का अध्ययन प्रत्यक्ष रूप से किया जा सकता है। इसका यही अर्थ है कि Wundt ने मध्यवर्ती अनुभव तथा तात्कालिक अनुभव के बीच अन्तर बतलाया था क्योंकि मध्यवर्ती अनुभव दैहिक होता है जबकि तात्कालिक अनुभव मानसिक होता है।

(V) समप्रत्यक्षण या आत्मबोध (Apperception)

Wundt द्वारा प्रतिपादित समप्रत्यक्षण का Concept से तात्पर्य स्पष्ट प्रत्यक्षण या स्पष्ट चेतना से है। Boring (1950) ने स्पष्ट रूप से बतलाया कि Wundt के Apperception के तीन महत्वपूर्ण पहलू हैं - समप्रत्यक्षण एक घटना है, समप्रत्यक्षण एक ध्यान है तथा समप्रत्यक्षण एक क्रिया है। Wundt ने यह बतलाया कि समप्रत्यक्षण का स्वरूप विश्लेषणात्मक होता है। जैसे- एक प्रकार का विश्लेषणात्मक समप्रत्यक्षण है क्योंकि इसके द्वारा चेतना के अन्तर्वस्तु की आसानी से अलग किया जाता है।

इस तरह Wundt का आधुनिक मनोविज्ञान का स्वरूप संवेदनवादी, परमाणुवादी, विश्लेषणवादी, साहचर्यवादी, अन्तःनिरीक्षणवादी, प्रयोगात्मक एवं संरचनावादी था। Wundt का मनोविज्ञान संवेदनवादी इसलिए माना जाता था क्योंकि उन्होंने सम्पूर्ण अनुभव को संवेदन से ही उत्पन्न माना। इनका मनोविज्ञान परमाणुवादी था क्योंकि मनोविज्ञान की विषय वस्तु- चेतन- अनुभव भी जिसकी संरचना प्रमुख दो तत्वों - संवेदन एवं भाव से होती है। Wundt के मनोविज्ञान का प्रमुख चेतन अनुभव का विश्लेषण करके उनके तत्वों को पता लगाना

था। Wundt का मनोविज्ञान आत्मवादी भी था क्योंकि चेतन अनुभव के दोनों तत्वों को जोड़ने का कार्य आत्मा के द्वारा होता था। इन्होंने अन्तःनिरीक्षण विधि को मनोविज्ञान के अध्ययन विधि के रूप में स्वीकार किया। इसलिए ये अन्तःनिरीक्षणवादी भी थे। Wundt प्रयोगात्मकवादी भी थे क्योंकि इन्होंने चेतन अनुभव का अध्ययन प्रयोग के माध्यम से करने पर जोर दिया। Wundt संरचनावादी भी माने जाते थे क्योंकि इनके मनोविज्ञान का मुख्य उद्देश्य चेतन अनुभव के संरचनात्मक तत्वों का खोज करना था।

② प्रथम एक प्रयोगकर्ता के रूप में —

आधुनिक-प्रयोगात्मक मनोविज्ञान के संस्थापक के रूप में Wundt का एक महत्वपूर्ण योगदान माना जाता है और इन्होंने ही मनोविज्ञान में प्रयोगों की शुरुआत की। Wundt ने दृष्टि तथा श्रवण दोनों से सम्बन्धित अनेकों प्रयोग किए। इन्होंने प्रतिक्रिया काल, ध्यान विस्तार, ध्यान विचलन, भावना तथा साहचर्य से सम्बन्धित अनेकों प्रयोगात्मक अध्ययन किए। इस तरह मनोविज्ञान के क्षेत्र में एक प्रयोगकर्ता के रूप में Wundt का एक महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

इस तरह मनोविज्ञान के विकास में Wundt के उपर्युक्त योगदानों को देखने से यह पता चलता है कि इन्होंने प्रयोगात्मक मनोविज्ञान के विकास में काफी महत्वपूर्ण कार्य किए हैं और इनका मनोविज्ञान मुख्य रूप से शरीरक्रिया विज्ञान पर आधारित रहा है।

लेकिन आलोचकों ने Wundt के मूल्यांकन में दो विचारधाराओं-भावना का त्रिविमीय सिद्धान्त एवं अन्तःनिरीक्षण विधि की कटु आलोचना की है। फिर भी इन आलोचनाओं के बावजूद मनोविज्ञान के क्षेत्र में Wundt के विभिन्न योगदानों

ਦਾ ਜ਼ਮਾਨਾ ਨਹੀਂ ਦੇਖ ਸਕਿਆ। ਉਹ ਪ੍ਰਯੋਗ ਕਰਦਿਆਂ ਮਨੋਵਿਗਿਆਨ ਦੇ ਵਿਕਾਸ ਲਈ ਜੋ ਕਾਫ਼ੀ ਪ੍ਰਯੋਗਾਤਮਕ ਅਧਿਐਨ ਕੀਤੇ ਹਨ। 1879 ਵਿਚ ਹੀ ਇਹ ਪਹਿਲਾ ਸੀ ਕਿ ਮਨੋਵਿਗਿਆਨ ਨੇ ਆਧੁਨਿਕ ਰੂਪ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕੀਤਾ। ਇਸ ਵਿਚ Wundt ਦਾ ਯੋਗਦਾਨ ਕਾਫ਼ੀ ਮਹੱਤਵਪੂਰਨ ਹੈ। Murphy (1949) ਨੇ Wundt ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਅਤੇ ਬਾਦ ਦੇ ਮਨੋਵਿਗਿਆਨ ਦੀ ਸਥਿਤੀ ਦੀ ਤੁਲਨਾ ਇਨ੍ਹਾਂ ਸ਼ਬਦਾਂ ਵਿਚ ਕੀਤੀ ਹੈ —

"Before Wundt published Physiological Psychology and established his laboratory, Psychology was little more than a waif knocking now at the door of physiology, now at the door of ethics, now at the door of epistemology. In 1879 it is set up as an experimental science with a local habitation and a name."

Murphy: An Historical Introduction of Modern Psychology, 1949, P. 119

— x — x —